www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गृहस्थ

एक योग साधना

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

गृहस्थ एक योग साधना

गृहस्थ योग

योग का अर्थ है–'जोड़ना, मिलाना ।' मनुष्य की साधारण स्थिति ऐसी होती है जिसमें वह अपूर्ण होता है । इस अपूर्णता को मिटाने के लिए किसी दूसरी शक्ति के साथ अपने आपको जोड़कर अधिक शक्ति का संचय करता है, अपनी सामर्थ्य के बल से अपूर्णता को दूर कर पूर्णता की ओर तीव्र गति से बढ़ता जाता है–यही योग का उद्देश्य है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हठयोग, राजयोग, जपयोग, लययोग, तंत्रयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, स्वरयोग, ऋजुयोग, महायोग, कुण्डलिनीयोग, बुद्धियोग, समत्वयोग, प्राणयोग, ध्यानयोग, सांख्ययोग, जड़योग, सूर्ययोग, चंद्रयोग, सहयोग, प्रणवयोग, नित्ययोग आदि ८४ प्रसिद्ध योग और ७०० अप्रसिद्ध योग हैं । इन विभिन्न योगों की कार्यप्रणाली, विधि व्यवस्था और साधना पद्धति एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है तो भी इन सबकी जड़ में एक ही तथ्य काम कर रहा है । माध्यम सबके अलग अलग हैं, पर उन सभी माध्यमों द्वारा एक ही तत्व ग्रहण किया जाता है । तुच्छता से महानता की ओर, अपूर्णता से पूर्णता की ओर, असत् से सत् की ओर, तप से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर जो प्रगति होती है उसका नाम योग है । अणु आत्मा को परम आत्मा बनाने का प्रयत्न ही योग है, यह प्रयत्न जिन जिन मार्गों से होता है उन्हें योगमार्ग कहते हैं ।

एक स्थान तक पहुंचने के लिए विभिन्न दिशाओं से विभिन्न मार्ग होते हैं । आत्म विस्तार के भी अनेक मार्ग हैं, इन मार्गों में स्थूल दृष्टि से भिन्नता होते हुए भी सूक्ष्म दृष्टि से पूर्ण रूपेण एकता है, जैसे भूख बुझाने के लिए कोई रोटी, कोई चावल, कोई दलिया, कोई मिठाई, कोई फल, कोई मांस खाता है । यह सब चीजें एक दूसरे से बिलकुल पृथक् प्रकार की हैं तो भी इन सबसे 'भूख मिटाना' यह एक उद्धेश्यपूर्ण होता है । इसी प्रकार योग के नाना रूपों का एक ही प्रयोजन है–आत्मभाव को विस्तृत करना, तुच्छता को महानता के साथ बांध देना ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक प्रकार के योगों में एक 'गृहस्थ योग' भी है । गंभीरतापूर्वक इसके ऊपर जितना ही विचार किया जाता है यह उतना ही अधिक महत्वपूर्ण, सर्वसुलभ तथा स्वल्प श्रमसाध्य है । इतना होते हुए भी इससे प्राप्त होने वाली जो सिद्धि है वह अन्य किसी भी योग से कम नहीं होती है वरन् अधिक होती है ।

प्राचीन समय में अधिकांश ऋषि गृहस्थ थे । वशिष्ठजी के सौ पुत्र थे, अत्रिजी की स्त्री अनुसुइया थीं, गौतम की पत्नी अहिल्या थीं, जमदग्नि के पुत्र परशुराम थे, च्यवन की स्त्री सुकन्या थीं, याज्ञवल्क्य की दो स्त्री गार्गी और मैत्रेयी थीं, लोमश के पुत्र शृंगी ऋषि थे । वृद्धावस्था में संन्यास ले लिया हो यह बात दूसरी है, परंतु प्राचीनकाल में जितने भी ऋषि हुए हैं वे प्रायः सभी गृहस्थ रहे हैं । गृहस्थ में ही उन्होंने तप किए हैं और ब्रह्म निर्वाण पाया है । योगीराज कृष्ण और योगेश्वर शंकर इन दोनों को ही हम गृहस्थ के रूप में देखते हैं ।

आत्मोन्नति करने के लिए गृहस्थ धर्म एक प्राकृतिक, स्वाभाविक, आवश्यक और सर्वसुलभ योग है । जब तक लड़का अकेला रहता है तब तक उसकी आत्म भावना का दायरा छोटा रहता है । वह अपने ही खाने, पहिनने, पढ़ने, खेलने तथा प्रसन्न रहने की सोचता है, उसका कार्यक्षेत्र अपने आप तक सीमित रहता है । जब विवाह हो जाता है तो यह दायरा बढ़ता है, वह अपनी, पत्नी की सुख सुविधाओं के बारे में सोचने लगता है, अपने सुख और मर्जी पर प्रतिबंध लगाकर पत्नी की आवश्यकताएं पूरी करता, उसकी सेवा-सहायता और प्रसन्नता में अपनी शक्तियों को खर्च करता है । कहने का तात्पर्य यह है कि आत्म भाव की सीमा बढ़ती है, एक से बढ़कर दो तक आत्मीयता फैलती है, इसके बाद एक छोटे शिशु का जन्म होता है । इस बालक की सेवा सुश्रूषा और पालन पोषण में निःस्वार्थ भाव से इतना मनोयोग लगता है कि अपनी निजी सुख सुविधाओं का ध्यान मनुष्य भूल जाता है और बच्चे की सुविधा का ध्यान रखता है । इस प्रकार यह सीमा दो से बढ़कर तीन होती है । क्रमशः यह मर्यादा बढ़ती है, पिता कोई मधुर मिष्ठान्न लाता है तो उसे खुद नहीं खाता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वरन् बच्चों को बांट देता है । खुद कठिनाई में रहकर भी बालकों की तंदुरुस्ती, शिक्षा और प्रसन्नता का ध्यान रखता है । दिन दिन खुदगर्जी के ऊपर अंकुश लगाता जाता है, आत्मसंयम सीखता जाता है और स्त्री, पुत्र, संबंधी, परिजन आदि में अपनी आत्मीयता बढ़ाता जातां है, क्रमशः आत्मोन्नति की ओर चलता जाता है ।

भगवान् मनु का कथम है कि–पुरुष, उसकी पत्नी और संतान मिलकर ही एक 'मनुष्य' पूर्ण होता है । जब तक यह सब नहीं होता तब तक वह अधकचरा, अधूरा और खण्डित मनुष्य है । जैसे प्रवेशिका परीक्षा पास किए बिना कॉलेज में प्रवेश नहीं हो सकता, उसी प्रकार गृहस्थ की शिक्षा पाएं बिना वानप्रस्थ–संन्यास आदि में प्रवेश कराना कठिन है । आत्मीयता का दायरा क्रमशः ही बढ़ता है– अकेले से, पति पत्नी दो में, फिर बालक के साथ तीन में, संबंधियों में, पडौसियों में, गांव, प्रांत, प्रदेश, राष्ट्र और विश्व में यह आत्मीयता क्रमशः बढ़ती जाती है । आगे चलकर सारी मनुष्य जाति में आत्मभाव फैलता है । फिर पशु पक्षियों में, कीट पतंगों में, जड़ चेतन में यह आत्मभाव विकसित हो जाता है । जो उन्नति एक से बढ़कर दो में, दो से तीन में हुई थी वही उन्नति धीरे धीरे आगे बढ़ती जाती है और मनुष्य संपूर्ण चर–अचर में आत्मसत्ता को ही समाया देखता है, उसे परमात्मा की दिव्य ज्योति सर्वत्र जगमगाती दीखती है । पत्नी तक अपने मन को जितने अंशों में फैलाया जाता है उतने अंशों में अपनी खुदगर्जी पर संयम होता है । बाल बच्चों के होने पर यह आत्मसंयम और अधिक बढ़ता है, अंत में जीव पूणतया आत्मसंयमी हो जाता है । दूसरे के लिए अपने आपको भूलने का अभ्यास क्रमशः इतना अधिक पुष्ट हो जाता है कि अपना कुछ रहता ही नहीं, सब कुछ बिराना हो जाता है । 'मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर' की ध्वनि उसके अंदर से निकलने लगती है, खुदी मिटती जाती है और खुदा मिलता जाता है । 'मैं' का अंत होने से 'तू' ही शेष रहता है । गृहस्थ योग की छोटी सी सर्वसुलभ साधना जब अपनी विकसित अवस्था तक पहुंचती है तो आत्मा परमात्मा बन जाती है । अपूर्णता से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छुटकारा पाकर पूर्णता उपलब्ध करता है और योग का वास्तविक उद्देश्य पूरा होता है ।

दृष्टिकोण का परिवर्तन

आत्मीयता की उन्नति के लिए अभ्यास करने का सबसे अच्छा स्थान अपना घर है । नट अपने घर के आंगन में कला खेलना सीखता है । बालक अपने घर खड़ा होना और चलना फिरना सीखता है । योग की साधना भी घर से ही प्रारंभ होनी चाहिए । प्रेम त्याग और सेवा का अभ्यास करने के लिए अपने घर का क्षेत्र सबसे अच्छा है । इन तत्वों का प्रकाश जिस स्थान पर पड़ता है वही चमकने लगता है । जब तक आत्मीयता के भावों की कमी रहती है तब तक औरों के प्रति दुर्भाव, घृणा, उपेक्षा के भाव रहते हैं किंतु जब अपनेपन के विचार बढ़ते हैं तो हल्के दर्जे की चीजें भी बहुत सुन्दर दिखाई पड़ने लगती हैं । माता अपने बच्चे के प्रति आत्मभाव रखती है, इसलिए यदि वह लाभदायक न हो तो भी उसे भरपूर स्नेह करती है । पतिव्रता पत्नियों को अपने काले कलूटे और दुर्गुणी पति भी इन्द्र जैसे सुन्दर और बृहस्पति जैसे गुणवान् लगते हैं ।

दुनिया में सारे झगड़ों की जड़ यह है कि हम देते कम हैं और मांगते ज्यादा हैं । हमें चाहिए कि दें बहुत और बदला बिलकुल न मांगें या बहुत कम पाने की आशा रखें । इस नीति को ग्रहण करते ही हमारे आसपास के सारे झगड़े मिट जाते हैं । आत्मीयता की महान साधना में प्रवृत्त होने वाले को अपना दृष्टिकोण देने का, त्याग और सेवा भावना का बनाना पड़ता है । आप प्रेम की उदार भावनाओं से अपने अंतःकरण को परिपूर्ण कर लीजिए और सगे संबंधियों के साथ त्याग एवं सेवा का व्यवहार करना आरंभ कर दीजिए । कुछ ही क्षणों के उपरांत एक चमत्कार हुआ दिखाई देने लगेगा । अपना छोटा सा परिवार जो शायद बहुत दिनों से कलह और क्लेशों का घर बना है– सुख, शांति का स्वर्ग दीखने लगेगा । अपनी आत्मीयता की प्रेम भावनाएं परिवार के आसपास के लोगों से टकराकर अपने पास वापस लौट आती हैं और वे आनंद की भीनी सुगन्धित फुहार से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छिड़ककर मुरझाए हुए अंतःकरण को हरा कर देती है ।

माली अपने ऊपर जिस बगीची की जिम्मेदारी लेता है उसे हरा भरा बनाने, सरसब्ज करने का जी जान से प्रयत्न करता है । यही दृष्टिकोण एक सद्गृहस्थ का होना चाहिए, उसे अनुभव करना चाहिए कि परमात्मा ने इन थोड़े से पेड़ों को सींचने, खाद देने, संभालने और रखवाली करने का भार विशेष रूप से मुझे दिया है । यों तो समस्त समाज और समस्त जगत् के प्रति हमारे बहुत से कर्तव्य हैं किंतु इस छोटी सी बगीची का भार तो विशेष रूप से अपने ऊपर रखा हुआ है । अपने परिवार के हर व्यक्ति को स्वस्थ रखने, शिक्षित बनाने, सद्गुणी, सदाचारी और चतुर बनाने की पूरी पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर समझते हुए, उसे ईश्वर की आज्ञा का पालन मानते हुए अपना उत्तरदायित्व पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिए । अपने परिवार के सदस्यों की सेवा भी पुण्य परमार्थ, लोकसेवा ईश्वर पूजन से किसी प्रकार कम नहीं है ।

स्वार्थ और परमार्थ का मूल बीज अपने मनोभाव–दृष्टिकोण के ऊपर निर्भर है । यदि पत्नी के प्रति उसे अपनी नौकरानी, दासी, संपत्ति, भोग सामग्री समझकर अपना मतलब गांठने, सेवाएं लेने, शासन करने का भाव हो तो यह भाव ही स्वार्थ, नरक, कलह, भार, दुख की ओर ले जाने वाला है । यदि उसे अपने उपवन का एक सुरम्य रसवृक्ष समझकर उसके प्रति सात्विक त्यागमय सेवा का, पुनीत उदारतामय प्रेम का भाव हो, अपने स्वार्थ की अपेक्षा उसके स्वार्थ को महत्व देने का भाव हो तो यह भाव भी दाम्पत्य जीवन को, पत्नी सान्निध्य को परमार्थ, स्वर्ग, स्नेह और आनंद का घर बना सकता है । 'देना कम और लेना ज्यादा' यह नीति झगड़े की, पापी, कटुता की, नरक की जड़ है । 'देना ज्यादा और लेना कम से कम' यह नीति प्रेम, सहयोग, पुण्य और परमार्थ की जननी है । बदला चाहने, स्वार्थ साधने, सेवा कराने की स्वार्थ दृष्टि से यदि पत्नी, पुत्र, पिता, माता, भाई, बुआ, बहिन को देखा जाए तो यह सभी बड़े स्वार्थी, खुदगर्ज, बुरे, रूखे, उपेक्षा करने वाले उद्दण्ड दिखाई देंगे । उनमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक से एक बड़ी बुराई दिखाई देगी और ऐसा लगेगा मानो गृहस्थ ही सारे दुखों, स्वार्थों और पापों का केन्द्र है । कई व्यक्ति गृहस्थी पर ऐसा ही दोष लगाते हुए कुढ़ते रहते हैं, खिन्न रहते हैं और घर छोड़कर भाग खड़े होते हैं । असल में यह दोष परिवार वालों का नहीं वरन् उनके अपने दृष्टिकोण का दोष है, पीला चश्मा पहनने वालों को हर वस्तु पीली ही दिखाई पड़ती है ।

प्रत्येक मनुष्य अपूर्ण है, वह अपूर्णता से पूर्णता की ओर यात्रा क र रहा है । ऐसी दशा में यह आशा नहीं रहनी चाहिए कि हमारे परिवार के सब सदस्य स्वर्ग के देवता हमारे पूर्ण आज्ञानुवर्ती होंगे । जीवन अपने साथ जन्म जन्मांतरों के संस्कारों को लाता है, यह संस्कार धीरे धीरे बड़े प्रयत्नपूर्वक बदले जाते हैं । एक दिन में उन सबका परिवर्तन नहीं हो सकता, इसलिए यह आशा रखना अनुचित है कि परिवार वाले पूर्णतया हमारे आज्ञानुवर्ती ही होंगे । उनकी त्रुटियों को सुधारने में, उन्हें आगे बढ़ाने में, उन्हें सुखी बनाने में संतोष प्राप्त करने का अभ्यास डालना चाहिए । अपनी इच्छाओं की पूर्ति से सुखी होने की आशा करना इस संसार से एक असंभव मांग करना है । दूसरे लोग हमारे लिए यह करें, परिवार वाले हमसे इस प्रकार का व्यवहार करें, इस बात के ऊपर अपनी प्रसन्नता केन्द्रित करना एक बड़ी भूल है । ऐसी भूल जो करते हैं उन्हें गृहस्थानंद से प्रायः पूर्णतया वंचित रहना पड़ता है ।

स्मरण रखिए गृहस्थ का पालन करना एक प्रकार के योग की साधना करना है । इसमें परमार्थ, सेवा, प्रेम, सहायता, त्याग, उदारता और बदला पाने की इच्छा से विमुखता—यही दृष्टिकोण प्रधान है । जो इसको धारण किए हुए हैं वही ब्राह्मी स्थिति में हैं, वह घर में रहते हुए भी संन्यासी हैं ।

यह सोचना ठीक नहीं कि गृहस्थाश्रम में बंधने से आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती । आत्मा को ऊंचा उठाकर परमात्मा तक ले जाना यह पुनीत आत्मिक साधना अंतःकरण की भीतरी स्थिति से संबंध रखती है । बाह्य जीवन से इसका कुछ संबंध नहीं । जिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकार ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ या संन्यासी आत्मा साधना द्वारा जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं, वैसे ही गृहस्थ भी कर सकता है। सदा सनातन काल से ऐसा होता आया है, अध्यात्म के साधकों में से गृहस्थों को ही हम अधिक देखते हैं। प्राचीनकाल के ऋषिगण आज के गैर जिम्मेदार बाबाजियों से सर्वथा भिन्न थे। घनी बस्तियां न बसाकर स्वच्छ वायु में दूर दूर घर बनाना, पक्के मकान न बनाकर छोटी झोंपड़ियों में रहना, वस्त्रों से लदे न रहकर शरीर को खुला रखना आदि उस समय की साधारण प्रथाएं थीं। उस समय के राजाओं तथा देवताओं के जो चित्र मिलते हैं उनमें वे सभी कटिवस्त्र के अतिरिक्त और कोई कपड़ा पहने नहीं दीखते। यह उस समय की परिपाटी थी, आज जिस वेशभूषा की नकल करके लोग अपने को साधु मान लेते हैं वह पहनावा, उढ़ाव, रहन–सहन उस समय सर्वसाधारण का था।

यह मान्यता असत्य है कि पुराने समय में ऋषि लोग अविवाहित ही रहते थे। यह ठीक है कि ऋषि मुनियों में कुछ ऐसे भी थे जो बहुत समय तक अथवा आजीवन ब्रह्मचारी रहते थे, पर उनमें से अधिकांश गृहस्थ थे। स्त्री–बच्चों के साथ होने से तपश्चर्या में, आत्मोन्नति में उन्हें सहायता मिलती थी। इतिहास पुराणों में पग–पग पर इस बात की साक्षी मिलती है कि भारतीय महर्षिगण, योगी–यति, साधु–तपस्वी, अन्वेषक, चिकित्सक, वक्ता, रचयिता, उपदेष्टा, दार्शनिक, अध्यापक, नेता आदि विविध रूपों में अपना जीवनयापन करते थे और अपने महान कार्य में स्त्री–बच्चों को भी भागीदार बनाते थे।

आत्म साधना में जो विक्षेप पैदा होता है उसका कारण अपनी कुवासना, संकीर्णता, तुच्छता, अनुदारता और स्वार्थपरता है। यह दुर्भाव ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ या संन्यास जिसके भी आश्रय में रहेंगे उसे ही पापमय बना देंगे। इसके विपरीत यदि अपने मन में त्याग, सेवा, सत्यता, सज्जनता एवं उदारता की भावनाएं विद्यमान हों तो कोई भी आश्रम स्वर्गदायक, मुक्तिपद, परमपद देने वाला हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता है । आध्यात्मिक साधकों को अपने मन में से इस भ्रम को पूर्णतया बहिष्कृत कर देना चाहिए कि गृहस्थाश्रम कोई छोटा धर्म है । यदि समुचित रीति से उसका पालन किया जाए तो ब्रह्मचर्य और संन्यास की तरह वह भी सिद्धिदाता प्रमाणित हो सकता है ।

गृहस्थ धर्म जीवन का एक पुनीत, आवश्यक एवं उपयोगी अनुष्ठान है । स्त्री और पुरुष के एकत्रित होने से दो अपूर्ण जीवन एक पूर्ण जीवन का रूप धारण करते हैं । पक्षी के दो पंखों की तरह, रथ के दो पहियों की तरह स्त्री और पुरुष का मिलन एक दृढ़ता एवं स्थिरता की सृष्टि करता है । शारीरिक और मानसिक तत्व के आचार्य जानते हैं कि कुछ तत्वों की पुरुष में अधिकता और स्त्री में न्यूनता होती है । इसी प्रकार कुछ तत्व स्त्री में अधिक और पुरुष में कम होते हैं, इस अभाव की पूर्ति दोनों के सहचरत्व से होती है । स्त्री पुरुष में एक दूसरे के प्रति जो असाधारण आकर्षण होता है उसका कारण वही क्षतिपूर्ति है । मन की सूक्ष्म चेतना अपनी क्षतिपूर्ति के उपर्युक्त साधनों को प्राप्त करने के लिए विचलित होती है तब उसे संयोग की अभिलाषा कहा जाता है । अंधे और पंगु मिलकर देखने और चलने के लाभों को प्राप्त कर लेते हैं, ऐसे ही लाभ दूसरे की सहायता से दंपत्ति को भी मिल जाते हैं ।

मुलतः न तो पुरुष बुरा है न स्त्री । दोनों ही ईश्वर की पवित्र कृतियां हैं, दोनों में ही आत्मा का निर्मल प्रकाश जगमगाता है । पुरुष का कार्यक्षेत्र घर से बाहर रहने के कारण उसकी बाह्य योग्यताएं विकसित हो गई हैं, वह बलवान्, प्रभावशाली, कमाऊ और चतुर दिखाई देता है, पर इसके साथ साथ ही आत्मिक सद्गुणों को उस बाह्य संघर्ष के कारण उसने बहुत कुछ खो दिया है । सरलता, सरसता, वफादारी, आत्म त्याग, दयालुता, प्रेम तथा वात्सल्य की वृत्तियां आज भी स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक देखी जाती हैं । मुद्दतों से शिक्षा दीक्षा, अनुभव एवं सामाजिक कार्यक्षेत्र से पृथक एक छोटे पिंजड़े से घर में जीवन भर बंद रहने और अपने जैसे अन्य मूर्खों की संगति मिलने के कारण वे बेचारी व्यावहारिक ज्ञान में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत कुछ पिछड़ गई है तो भी उनमें आत्मिक सद्‌गुण पुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक विद्यमान हैं । उनके सान्निध्य से नरक, पतन और मायाबंधन जैसे संकट उत्पन्न होने की आशंका नहीं है । सच तो यह है कि उनके पवित्र अंचल की छाया में बैठकर पुरुष अपनी शैतानी आदतों से बहुत कुछ छुटकारा पा सकता है । उसकी स्नेह गंगा के अमृतजल का आचमन करके अपने कलुष–कषायों से, पाप तापों से छुटकारा पा सकता है ।

जिनका अंतःकरण पवित्र है वे कोमलता की अधिकता के कारण स्त्री में और भी अधिक सत्. तत्व का अनुभव करते हैं । हजरत मुहम्मद साहब कहा करते थे कि–'मेरा स्वर्ग मेरी माता के पैरों तले है ।' महात्मा विलियम का कथन है कि–'ईश्वर ने स्त्री के नेत्रों में दो दीपक रख दिए हैं ताकि संसार में भूले भटके लोग उनके प्रकाश में अपना खोया हुआ रास्ता देख सकें ।' तपस्वी लोवेल ने एक बार कहा था–'नारी का महत्व मैं इसलिए नहीं मानता कि विधाता ने उसे सुन्दर बनाया है, न उससे इसीलिए प्रेम करता हूं कि प्रेम के लिए उत्पन्न की गई है । मैं तो उसे इसलिए पूज्य मानता हूं कि मनुष्य का मनुष्यत्व केवल उसी में जीवित है ।' दिव्यदर्शी टेलर ने अपनी अनुभूति प्रकाशित की थी कि–'स्त्री की सृष्टि ईश्वरीय प्रकाश है, वह एक मधुर सरिता है जहां मनुष्य अपनी चिंताओं और दुखों से त्राण पाता है ।' दार्शनिक प्लेटो ने कहा है–'सृष्टि के आदि में मनुष्य अपंग था, वह पृथ्वी के एक कोने में पड़ा सिसक रहा था । स्त्री ने ही उसे उठाया और पालकर बड़ा किया, आज वही कृतघ्न उन स्त्रियों को पैर की जूती समझता है ।' कवि हारग्रच की अनुभूति है कि–'स्त्रियां भूलोक की कविता हैं, पुरुष के भाग्य का विस्तार उन्हीं के हाथ में है ।' कारलाइल कहा करते थे–'यदि तुम प्रेम के साक्षात् दर्शन करना चाहते हो तो माता के गद्‌गद् नेत्रों को देखो ।' सृष्टि के आरंभकाल का दिग्दर्शन कराते हुए संत केलबैल ने कहा कि–'जब तक आदमी अकेला था तब तक स्वर्ग भी कण्टकाकीर्ण था । देवताओं के गीत, शीतल, समीर और ललित वाटिकाएं उसके लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी व्यर्थ थीं । यह सब होते हुए भी वह उदास रहता था और आहें भरता था, परंतु उसे हब्बा मिल गई तो सारा दुःख दूर हो गया, कांटे फूलों में बदल गए ।

जिन संतों ने अपने पवित्र नेत्रो से नारी को देखा है उन्हें उसमें ईश्वर की सजीव कविता मूर्तिमती दिखाई दी है । जिनकी आंखों में पाप है उनके लिए बहिन, बेटी और माता की समीपता में नहीं प्रत्येक ज़ड़ चेतन की समीपता में खतरा है । जिनके अंचल में आग बंधी हुई है उसके लिए सर्वत्र अग्निकाण्ड का खतरा है । जिसकी आंखों पर हरा ठण्डा चश्मा है उसके लिए कड़ी धूप भी शीतल है । पाठको ! अपना दृष्टिकोण पवित्र बनाओ । विश्वास रखो कि राजा जनक की ही भांति आप भी गृहस्थ में रहते हुए सच्चे महात्मा बन सकते हैं ।

गृहस्थ संचालन के संबंध में दो दृष्टि कोण हैं । एक तो ममता, मालिकी, अहंकार और स्वार्थ का, दूसरा आत्म त्याग, सेवा, प्रेम और परमार्थ का । पहला दृष्टिकोण बंधन, पतन, पाप और नरक की ओर ले जाने वाला है, दूसरा दृष्टिकोण मुक्ति, उत्थान, पुण्य और स्वर्ग को प्रदान करता है । शास्त्रकारों ने, संत पुरुषों ने जिस गृहस्थ की निंदा की है–बंधन बताया है और छोड़ देने का आदेश दिया है वह स्वार्थमय दृष्टिकोण संबंधी है । पारमार्थिक गृहस्थ तो अत्यंत उच्चकोटि की आध्यात्मिक साधना है, उसे तो प्रायः सभी ऋषि, महात्मा, योगी, यति तथा देवताओं ने अपनाया है और उसकी सहायता से आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है । इस मार्ग को अपनाने से उनमें से न तो किसी को बंधन में पड़ना पड़ा और न नरक को जाना पड़ा । यदि गृहस्थ बंधनकारक–नरकमय होता तो उसमें पैदा होने वाले बालक पुण्यमय कैसे होते ? बड़े बड़े योगी इस मार्ग को क्यों अपनाते ? निश्चय ही गृहस्थ धर्म एक परम पवित्र आत्मोन्नतिकारक जीवन को विकसित करने वाला धार्मिक अनुष्ठान है, एक सत् समन्वित आध्यात्मिक साधना है । गृहस्थ पालन करने वाले व्यक्ति को यह हीन भावना मन में लाने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है कि वह अपेक्षाकृत नीचे स्तर पर है या आत्मिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है या कमजोर है । अविवाहित जीवन और विवाहित जीवन में तत्वतः कोई अंतर नहीं है । यह अपनी अपनी सुविधा, रुचि और कार्यप्रणाली की बात है, जिसे जिसमें सुविधा पड़ती हो वह वैसा करे । जिनका कार्यक्रम देशाटन का हो उन्हें स्त्री बच्चों का झंझट पालने की आवश्यकता नहीं, परंतु जिन्हें एक स्थान पर रहना हो उनके लिए विवाहित होने में ही सुविधा है । इसमें पिछड़े हुए और बढ़े हुए का कुछ भेद नहीं—दोनों का दर्जा बिल्कुल बराबर है । मानसिक स्थिति और कार्य प्रणाली के आधार पर ही तुच्छता और महानता होती है । जहां भी ऊंचा दृष्टिकोण होगा वहां ही महानता होगी ।

जीवन का परमलक्ष्य आत्मा को परमात्मा में मिला देना है । व्यक्तिगत स्वार्थ को प्रधानता न देते हुए लोकहित की भावना से काम करना, यही आध्यात्मिक साधना है । इस साधना को क्रियात्मक जीवन में लाने के लिए भिन्न भिन्न तरीके हो सकते हैं, उन तरीकों में से एक तरीका गृहस्थ योग भी है । बालक घर मे से ही प्रारंभिक क्रियाएं सीखता है । जीवन के लिए जितने काम चलाऊ ज्ञान की आवश्यकता है, उसका आधे से अधिक भाग घर में ही प्राप्त होता है । हमारी आत्मिक साधना भी घर से आरंभ होनी चाहिए । जीवन को उच्च, उन्नत, सुसंस्कृत, संयमित, सात्विक, सेवा मय एवं परमार्थपूर्ण बनाने की सबसे अच्छी प्रयोगशाला अपना घर ही हो सकता है । स्वाभाविक प्रेम, उत्तरदायित्व, कर्तव्य पालन, परस्पर अवलंबन, आश्रय—स्थान, स्थिर क्षेत्र, लोक—लाज आदि अनेक कारणों से यह क्षेत्र ऐसा सुविधाजनक हो जाता है कि आत्म त्याग और सेवामय दृष्टिकोण के साथ काम करना इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है ।

गृहस्थ योग के साधक के मन में यह विचारधारा चलती रहनी चाहिए कि यह परिवार मेरा साधना क्षेत्र है । इस वाटिका को सब प्रकार सुन्दर, सुरभित और पल्लवित बनाने के लिए सच्चे हृदय से सदा शक्ति भर प्रयत्न करते रहना मेरा कर्मकाण्ड है । भगवान ने जिस वाटिका को सींचने का भार मुझे दिया है उसे ठीक तरह सींचते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहना मेरी ईश्वर परायणता है । घर का कोई भी सदस्य हीन दर्जे का नहीं है जिसे मैं तुच्छ समझूं उपेक्षा करूं या सेवा से जी चुराऊं । मैं मालिक, नेता, मुखिया या कमाऊ होने का अहंकार नहीं करता, यह मेरा आत्मनिग्रह है । हर एक सदस्य के विकास में अपनी सेवाएं लगाते रहना मेरा परमार्थ है । बदले की जरा सी इच्छा न रखकर विशुद्ध कर्तव्य भाव से सेवा में तत्पर रहना मेरा आत्म त्याग है । अपनी सुख सुविधाओं की परवाह न करते हुए औरों की सुख सुविधा बढ़ाने का प्रयत्न करना मेरा तप है । घर के हर सदस्य को सद्गुणी, सत्स्वभाव का, सदाचारी एवं धर्म परायण बनाकर विश्व की सुख शांति में वृद्धि करना मेरा यज्ञ है । सबके हृदय पर जिसका मौन उपदेश हो, अनुकरण से सुसंस्कार बनें, अपना आचरण ऐसा पवित्र एवं आदर्शमय रखना मेरा व्रत है । धर्म से उपार्जित अन्न से जीवन निर्वाह करना और कराना, यह मेरा संयम है । प्रेम, उदारता, सहानुभूति की भावना से ओत प्रोत रहना और रखना, प्रसन्नता, आनंद और एकता की वृद्धि करना मेरी आराधना है । मैं अपने गृह मंदिर में भगवान की चलती फिरती प्रतिमाओं के प्रति अगाध भक्ति भावना रखता हूं । सद्गुण, सत् स्वभाव और सत् आचरण के दिव्य शृंगार से इन प्रतिमाओं को सुसज्जित करने का प्रयत्न ही मेरी पूजा है । मेरा साधन सच्चा है, साधन के प्रति मेरी भावना सच्ची है, अपनी आत्मा के सम्मुख मैं सच्चा हूं । सफलता–असफलता की जरा भी परवाह न करके सच्चे निष्काम कर्मयोगी की भांति मैं अपने प्रयत्न की सच्चाई में संतोष अनुभव करता हूं । मैं सत्य हूं, मेरी साधना सत्य है, मैंने सत्य का आश्रय ग्रहण किया है उसे सत्यतापूर्वक निवाहने का प्रयत्न करूंगा ।

उपर्युक्त मंत्र हर गृहस्थयोगी को भली प्रकार हृदयंगम कर लेना चाहिए । दिन में कई बार मंत्र दुहराना चाहिए । एक छोटे कार्ड पर सुन्दर अक्षरों में लिखकर इस मंत्र को अपने पास रख लेना चाहिए और जब भी अवकाश मिले एक एक शब्द का नमन करते हुए इस मंत्र को पढ़ना चाहिए । हो सके तो सुन्दर अक्षरों में लिखकर चित्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की भांति इसे अपने कमरे में लगा लेना चाहिए । प्रातः निद्रा त्यागने पर पलंग पर पड़े पड़े ही कई बार इस मंत्र को मन ही मन दुहराना चाहिए और निश्चय करना चाहिए कि आज दिन भर इन भावनाओं को अधिक से अधिक मात्रा में, कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करूंगा, परिवार वालों के साथ व्यवहार करते समय मंत्र की भावना का सतर्कतापूर्वक ध्यान रखूंगा । इस निश्चय के साथ शैया त्यागने का असर दिन भर रहता है, प्रातःकाल जो आदेश अंतर्मन को दिए हैं वे अधिक गहरे उतर जाते हैं । वे जल्दी विस्मृत नहीं होते और यथा अवसर वे ठीक समय पर स्मरण हो जाते हैं, इसीलिए प्रातःकाल इस मंत्र को नियमित रूप से अवश्य ही दुहराना चाहिए ।

मैं गृहस्थ योग हूं, मेरा जीवन साधनामय है । दूसरे कैसे हैं ? क्या करते हैं ? क्या सोचते हैं ? क्या कहते हैं ? इसकी मैं तनिक भी परवाह नहीं करता । मैं अपने आप में संतुष्ट रहता हूं । मेरी कर्तव्य पालन की सच्ची साधना इतनी महान है, इतनी शांतिदायिनी, इतनी तृप्तिकारक है कि उसमें मेरी आत्मा आनंद में सराबोर हो जाती है । मैं अपनी आनंदमयी साधना को निरंतर जारी रखूंगा, गृहक्षेत्र में परमार्थ भावनाओं के साथ ही काम करूंगा।' यह संकल्प दृढ़तापूर्वक मन में जमा रहना चाहिए । जब भी मन विचलित होने लगे, जब भी पैर पीछे डिगने की संभावना प्रतीत हो तभी इस संकल्प को मनोयोगपूर्वक दृढ़ करना चाहिए ।

रात्रि को सोने से पूर्व दिन भर के कार्यों पर विचार करना चाहिए । (१) आज परिवार से संबंध रखने वाले क्या क्या कार्य किए ? (२) उनमें क्या भूल हुई ? (३) स्वार्थ से प्रेरित होकर क्या अनुचित कार्य किया ? (४) भूल के कारण क्या अनुचित कार्य हुआ ? (५) क्या क्या कार्य अच्छे, उचित और गृहस्थ योग की मान्यता के अनुसार हुए ? इन पांचों प्रश्नों के अनुसार दिन भर के पारिवारिक कार्यों का विभाजन करना चाहिए और आगे से त्रुटियों के सुधार का उपाय सोचना चाहिए । (१) भूल की तलाश करना (२) उसे स्वीकार करना (३) गलती के लिए लज्जित होना और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(४) उसे सुधारने का सच्चे मन से प्रयत्न करना । यह चार बातें जिसे पसंद हैं, जो इस मार्ग पर चलता है, उसकी गलतियां दिन दिन कम होती जाती हैं और वह शीघ्र ही दोषों से छुटकारा पा लेता है ।

गृहस्थ योग की साधना के मार्ग पर चलते हुए साधक के मार्ग में नित नई कठिनाइयां आती रहती हैं । कभी अपनी भूल से, कभी दूसरों की भूल से ऐसी घटनाएं घटित हो जाती हैं जिनका नियत सिद्धांत से मेल नहीं खाता । इच्छा रहती है कि अपना हर एक आचरण ठीक रहे, हर एक क्रिया सिद्धांत के अनुकूल हो, परंतु अक्सर भूलें होती रहती हैं । साधक कुछ दिन तक सोचता है कि दस बीस दिन या महीने में यह दूर हो जाएगी और मेरी संपूर्ण क्रियाएं सिद्धांतानुकूल होने लगेंगी, पर जब काफी समय बीत जाता है और तब भी भूलें समाप्त नहीं होतीं तो चिंता, निराशा और पराजय की भावनाएं मन में घूमने लगती हैं । साधक सोचता है कि इतने दिन से प्रयत्न कर रहा हूं, पर स्वभाव पर विजय नहीं मिलती । नित्य गलतियां होती हैं, ऐसी दशा में साधना चल नहीं सकती । कभी सोचता है कि हमारे घर वाले उद्दण्ड, गंवार, मूर्ख और कृतघ्न हैं, यह लोग मुझे परेशान एवं उत्तेजित करते हैं और मेरे जीवन को साधना की नियत दिशा में नहीं चलने देते तो साधना व्यर्थ है । इस प्रकार के निराशाजनक विचारों से प्रेरित होकर वह अपने व्रत को छोड़ देता है ।

मनुष्य के स्वभाव में त्रुटियां और कमजोरियां रहना निश्चित है । जिस दिन मनुष्य पूर्णरूपेण त्रुटियों से परे हो जाएगा, उसी दिन वह परमपद को प्राप्त कर लेगा और जीवन मुक्त हो जाएगा । जब तक मनुष्य योनि में है, देव योनि से पीछे है तब तक यही मानना पड़ेगा कि मनुष्य त्रुटिपूर्ण है । जहां कई ऐसे व्यक्तियों का सम्मिलन है जिसमें कोई तो आत्मिक भूमिका में बहुत आगे है कोई बहुत पीछे है, ऐसे क्षेत्र में नित नई त्रुटियों का, कठिनाइयों का सामने आना स्वाभाविक है । इनमें से कुछ अपनी गलती के कारण उत्पन्न हुई होंगी, कुछ अन्यों की गलती से । यह क्रम धीरे धीरे दूर होता जाता है, पर यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिन है कि अपना परिवार पूर्ण रूपेण देव परिवार हो जाए । इसके लिए कठिनाई से डरने घबराने या विचलित होने की भी कुछ आवश्यकता नहीं है । साधना का अर्थ ही 'त्रुटियों के सुधार का अभ्यास' है—अभ्यास को निरंतर जारी रखना चाहिए । योगीजन नित्य प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि की साधना करते हैं, क्योंकि उनकी मनोभूमि अभी दोषपूर्ण है । जिस दिन उनके दोष सर्वथा समाप्त हो जाएंगे उसी दिन, उसी क्षण वे ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त कर लेंगे । दोषों का सर्वथा अभाव—यह अंतिम सीढ़ी का, सिद्धि अवस्था का लक्षण है, वहां तक पहुंच जाने पर तो कुछ करना ही बाकी नहीं रह जाता । साधकों को यह आशा न करना चाहिए कि थोड़े ही समय में इच्छित भावनाएं पूर्ण रूप से क्रिया में आ जाएंगी । विचार क्षण भर में बन जाता है, पर उसे संस्कार का रूप धारण करने में समय लगता है । हथेली पर सरसों नहीं जमती । पत्थर पर निशान करने के लिए रस्सी की रगड़ बहुत समय तक जारी रहनी चाहिए । स्मरण रखिए दोषों से सर्वथा मुक्ति ही लक्ष्य है, ध्येय है, सिद्ध अवस्था है । साधक का आरंभिक लक्षण यह नहीं है । आम का पौधा उगते ही यदि मीठे आम तोड़ने के लिए उसके पत्तों को टटोलेंगे तो मनोकामना पूर्ण न होगी ।

गृहस्थ योग की अपनी साधना आरंभ करते ही आपको इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि भूलों, त्रुटियों, कठिनाइयों और असफलताओं का आपको नित्य सामना करना पड़ेगा, नित्य उनसे लड़ना पड़ेगा, नित्य उनका संशोधन और परिमार्जन करना होगा और अंत में एक न एक दिन सारी कठिनाइयों को परास्त कर देना होगा । जैसे भूख, निद्रा, मल त्याग आदि नित्य कर्मों को रोज करते हैं तो भी दूसरे दिन फिर उनकी जरूरत पड़ती है, इस रोज रोज के झमेले से कोई निराश या अनुत्साहित नहीं होता वरन् धैर्यपूर्वक नित्य ही उसकी व्यवस्था की जाती है । इसी प्रकार गृहस्थ योग की साधना में अपनी या दूसरों की कमजोरी से जो भूल हो उनसे डरना या निराश न होना चाहिए वरन् अधिक दृढ़ता एवं उत्साह से परिमार्जित कर धैर्यपूर्वक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्न करते रहना चाहिए ।

पूर्ण रूप से सुधार हुआ है या नहीं–यह देखने की अपेक्षा यह देखना चाहिए कि पहले की अपेक्षा सात्विकता में कुछ वृद्धि हुई है या नहीं ? यदि थोड़ा बहुत भी बढ़ोत्तरी हुई तो यह आशा, उत्साह, प्रसन्नता और सफलता की बात है । बूंद बूंद से घड़ा भर जाता है, कण कण जोड़ने से मनों जमा हो जाता है, राई राई इकट्ठा करने से पर्वत बन जाता है । यदि प्रतिदिन थोड़ी थोड़ी सफलता भी मिले तो हमारे शेष जीवन के असंख्य दिनों में वह सफलता बड़ी भारी मात्रा में जमा हो सकती है । यह संपत्ति किसी प्रकार नष्ट होने वाली नहीं है । यह जमा होने का क्रम अगले जन्म में जारी रहेगा और लक्ष्य तक एक न एक दिन पहुंच ही जाएगा । धीरे धीरे सफलता मिले तो उत्साह से काम करना चाहिए, निराश होकर छोड़ बैठने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

परिवार की चतुर्विधि पूजा

स्वार्थ बुद्धि से व्यवहृत होने वाले गृहस्थ को माया बंधन कहा गया है । मैं घर का स्वामी हूं, घर के प्रत्येक सदस्य को मेरी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए । प्रत्येक को मेरी इच्छानुसार चलना चाहिए, प्रत्येक को मेरी मर्जी और सुविधा का आचरण करना चाहिए और मैं जिस तरह रखना चाहूं उस तरह रहना चाहिए । इस प्रकार की इच्छा और आकांक्षाओं को लेकर जो गृहस्थ में प्रवेश करता है उसे निस्संदेह उसमें नरक, दुःख, क्लेश, भार बंधन या माया के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता । यह संभव नहीं कि सब लोग अपनी मनमर्जी के बन जाएं । गुण, कर्म और स्वभाव की भिन्नता हर मनुष्य में पाई जाती है । अनेक जन्मों के संचित संस्कारों के समूह द्वारा स्वभाव बनता है, प्रयत्न करने पर उसमें सुधार तो हो जाता है पर यह संभव नहीं कि कोई प्राणी अपनी मौलिकता को बिल्कुल खो दे । हर व्यक्ति की रुचि, इच्छा, वृत्ति, भावना एवं प्रवृत्ति भिन्न होती है । मिट्टी के पुतले की तरह चुपचाप हर एक आज्ञा को मन, वचन और कर्म से कोई शिरोधार्य कर ले यह संभव नहीं । इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार कुछ न कुछ मतभेद रहेगा ही, अपने स्वार्थों का संघर्ष नहीं मिट सकता । इस प्रकार आपकी आज्ञा मानने में जहां उसके निजी स्वभाव में, स्वार्थ में संघर्ष होता होगा वह व्यक्ति आज्ञा पालन में आनाकानी करेगा । इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि अपनी मर्जी यदि पारिवारिक स्थिति की अपेक्षा बहुत आगे बढ़ गई तो भी दूसरे उसे मानने में तत्पर न होंगे । ऐसी दशा में जो असंतोष, मनमुटाव, क्रोध, कलह एवं संघर्ष होगा वह अशांति का कारण बनेगा, घर में दुःख ही दुःख दिखाई देगा ।

ऐसी दुःखदायी स्थिति उत्पन्न न होने पाए इसके लिए समझौते की नीति से काम लेना पड़ता है । अपनी मर्जी पर अड़ने या उसे दूसरों पर बलात् थोपने की अपेक्षा अपने आपको नरम बनाना पड़ता है । जिस सीमा तक कोई दुष्परिणाम उपस्थित न होता हो उस सीमा तक समझौता कर लेना चाहिए । यह ठीक है कि घर के लोगों को ठीक मार्ग पर रखना अपना कर्तव्य है, पर यह भी ठीक है कि पूर्ण रूप से किसी को तत्काल इच्छानुवर्ती बना लेना भी सुगम नहीं, थोड़ा झुकने से ही काम चलता है । समझौते की नीति से गुजर होती है । सरकस के लिए जानवरों को सधाने वाले मास्टर जानते हैं कि उजड्ड जंगली जानवरों को रास्ते पर लाने में, इच्छित खेल सिखाने में कितनी देर लगती है, कितना नरम गरम होना पड़ता है ? इसके विपरीत अन्य बातें उपयोगी नहीं । बीच के रास्ते से चलना, उदारता और सहनशींलता के आधार पर काम करना ही हितकर होता है– इसी आधार पर घर की सुख शांति कायम रह सकती है ।

शांति, संतोष और व्यवस्था कायम रखने का तरीका यह है कि आत्मत्याग की नीति को प्राथमिकता दी जाए । आप अपना उदाहरण ऐसा रखें जिसे देखकर घर के अन्य लोगों को भी आत्म त्याग की प्रेरणा मिले । 'मुझे कम आपको ज्यादा'–यह भाव जितनी ही प्रधानता प्राप्त करेंगे उतनी ही शांति और सुव्यवस्था कायम रहेगी । गृहस्थ योगी को, अपने को एक निस्वार्थ, निष्पक्ष एवं सद्भावी सेवक के रूप में घर वालों के सामने उपस्थित करना चाहिए । घर के लोगों से मुझे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्या लाभ मिलता है ? यह लोग मेरे आत्म त्याग की कद्र करते हैं या नहीं ? इन प्रश्नों को मन में कभी प्रवेश न करने देना चाहिए वरन् सदा यह सोचना चाहिए कि एक ईमानदार माली की तरह मैं अपनी वाटिका को सुरभित बनाने में शक्तिभर प्रयत्न करता हूं ? अपनी योग्यता और सामर्थ्य में से कुछ चुराता तो नहीं हूं ? मेरी निस्वार्थता और निष्पक्षता में किसी प्रकार का आलस्य–प्रमाद तो नहीं हो रहा है ? यदि इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिलता है तो यह बड़ी ही आनंददायक और शांतिप्रद बात समझी जानी चाहिए । प्रशंसा होती है या नहीं, अहसान मिलता है या नहीं ? सफलता मिलती है या नहीं ? ऐसे प्रश्नों का लेखा देना अपनी साधना को चौपट करना है । इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देना दूसरों के हाथ की बात है । साधक को अपनी प्रसन्नता दूसरों के हाथ नहीं बेचनी चाहिए । दूसरे को कुछ देने की प्रसन्नता मिले–यह एक कंगाली की स्थिति है । हमें आनंद का स्रोत अपनी आत्मा में खोजना चाहिए । यदि ठीक प्रकार कर्तव्य पालन किया गया हो तो इससे अधिक आनंददायक दुनियां की और कोई बात नहीं हो सकती ।

सूक्ष्म दृष्टि से यह निरीक्षण करते रहना चाहिए कि घर के हर स्त्री–पुरुष, बालक को शारीरिक और मानसिक उन्नति का समुचित अवसर मिल रहा है या नहीं ? जीवन विकास और भविष्य निर्माण के स्वाभाविक अधिकार से कोई वंचित तो नहीं हो रहा है ? किसी को अनावश्यक सुविधा और किसी पर अनुचित दबाव तो नहीं हो रहा है ? इन तीनों पर बारीकी से नजर डालते रहने से यह बात मालूम होती रहती है कि किस व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है । कुछ ऐसी प्रथा चल पड़ी है कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को, स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों को और बिना कमाने वालों या कम कमाने वालों की अपेक्षा अधिक कमाने वालों को अधिक सुविधा दी जाती है । खाने, पहनने, मनोरंजन तथा सम्मान पाने में वे आगे रहते हैं । बेचारी लड़कियां और स्त्रियां तो एक प्रकार से फालतू प्राणी समझे जाते हैं, उनकी सुविधा आवश्यकता और विकास की ओर बहुत कम ध्यान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया जाता है । यह अन्याय मिटना और मिटाया जाना चाहिए । स्त्रियों और लड़कियों, न कमाने वालों और रोगी, वृद्ध या असमर्थों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप समुचित सुविधाएं मिलनी चाहिए ।

स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन तथा भविष्य निर्माण का हर एक को अवसर मिलना चाहिए । यह देखते रहना चाहिए कि किसी के ऊपर ऐसा शारीरिक या मानसिक दबाव तो नहीं पड़ रहा है, जिसके कारण उसका स्वास्थ्य नष्ट होता हो । आहार विहार के असंयम के कारण कोई अपने को अस्वस्थता के मार्ग पर तो नहीं बढ़ाए लिए जा रहा है, यह ध्यान रखने की बात है । यदि बहुमूल्य, बढ़िया, पौष्टिक भोजन प्राप्त न होता हो, मोटा खाकर गुजारा करना पड़ता हो तो इसमें कोई चिंता की बात नहीं, इससे स्वास्थ्य नष्ट नहीं हो सकता । आहार विहार की अव्यवस्था ही वह दोष है जिसके कारण स्वास्थ्य नष्ट होता है ।

शरीर की भूख बुझाने के लिए जैसे भोजन आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक भूख को बुझाने के लिए शिक्षा आवश्यक है । घर के हर व्यक्ति को शिक्षित बनाना चाहिए, जो स्कूल जा सकते हों वे स्कूल में शिक्षा प्राप्त करें । जिनके लिए यह संभव न हो वे घर पर पढ़ें । बच्चे, जवान या बूढ़े कोई भी क्यों न हों सभी में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करनी चाहिए और उसके लिए साधन व्यवस्था का प्रबंध करना चाहिए । एक दो घण्टे नियमित रूप से गृहपाठशाला चलती रहे, अक्षर ज्ञान हो जाने के उपरांत ऐसी चुनी हुई पुस्तकें देनी चाहिए जिससे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान क्रमशः बढ़ता रहे । जीवन के विकास की आवश्यक समस्याओं को वे समझें और उन पर बारीकी के साथ विचार करना सीखें तथा प्रामाणिक व्यक्तियों की उस विषय पर सम्मतियाँ पढ़ें । रामायण आदि धार्मिक पुस्तकें पढ़ना ठीक है, परंतु केवल मात्र इतिहास पुराणों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए । जीवन संग्राम की प्रत्यक्ष समस्याओं को समझाना और सुलझाना भी आवश्यक हैं– यह भी धर्म का ही अंग है । अक्षर ज्ञान, शब्दकोश व्याकरण आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के द्वारा भाषा का ज्ञान बढ़ाना चाहिए, साथ साथ आवश्यक विषयों पर सत्संग, वादविवाद, प्रश्नोत्तर, शंका समाधान, प्रवचन आदि उपायों से जानकारी, बुद्धिमत्ता विचारशक्ति की भी वृद्धि होनी चाहिए । शिक्षा एवं विद्या की वृद्धि का अवसर हर एक को आवश्यक रूप से उसी प्रकार से मिलना चाहिए जैसे कि भोजन की व्यवस्था जरूरी होती है ।

स्वास्थ्य और शिक्षा के बाद मनोरंजन का प्रश्न आता है, वह भी एक आवश्यक प्रश्न है। यदि मनुष्य को आनन्दित होने, उल्लासित होने, हंसने, प्रसन्न होने, खेलने, मनोविनोद करने का अवसर न मिले तो उसकी मनोभूमि बड़ी कर्कश, चिड़चिड़ी, असहिष्णु और निराशामय बन जाएगी । जो सदा कोल्हू के बैल की तरह काम में जुते रहते हैं, कैदी की तरह एक नियत क्षेत्र में काम करते रहते हैं । भोजन, मंजूरी और निद्रा यही तीन कार्यक्रम जिनके रहते हैं उनकी मानसिक चेतना की सरसता धीरे धीरे सूखती जाती है और वे भीतर बाहर से अनुदार, विरोधी, दोषारोपण करने वाले, अविश्वासी डरपोक और कायर बन जाते हैं । ऐसे लोगों को दुनियां के प्रति सदा अविश्वास और असंतोष रहता है । इन प्रवृत्तियों के कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होने लगता है, आयु घटने लगती है और बुढ़ापा घेर लेता है ।

चौथी बात भविष्य निर्माण की है । आज की जरूरत किसी प्रकार पूरी हो जाए, केवल मात्र इतने से संतुष्ट न हो जाना चाहिए वरन् यह देखना चाहिए कि हर व्यक्ति का भविष्य उन्नत, सुखमय, समृद्ध, प्रकाशवान एवं उज्ज्वल कैसे हो सकता है ? प्राणी के जन्म धारण करने का उद्देश्य किसी प्रकार दिन काटते रहना नहीं वरन् यह है कि वह अपनी स्थिति को ऊंचा उठाए, आगे बढ़े और अधिक साधन संपन्न होता हुआ चिरविकसित हो । ऊंचा ऊंचा और अधिक ऊंचा जीवन बने, इसके लिए सदैव सोचने और प्रयत्न करते रहने की आवश्यकता है । भीतरी और बाहरी जीवन के दोनों पहलू निरंतर विकसित होते रहें ऐसा कार्यक्रम सदा जारी रहना चाहिए । भविष्य में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्नति कर सकने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता होती है.उन साधनों को जुटाने के लिए सदैव ध्यान रखना आवश्यक कर्तव्य है । अपनी शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कठिनाई को हल करने योग्य शिक्षा, योग्यता व अनुभव संपादन किए बिना जीवन सुखमय नहीं बन सकता । इसलिए पढने लिखने की, स्वस्थ रहने की, बीमारी से बचे रहने की, बोलने चालने की, लेन देन की योग्यताएं एकत्र करने के अवसर हर एक को मिलने चाहिए । अपने पैरों पर खड़े होकर अपनी योग्यता से अपना निर्वाह कर लेने की क्षमता संपादन करने का आरंभ से ही ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि दुर्भाग्यवश ऐसे अवसर भी जीवन में आ सकते हैं जब नियत संपत्ति से या स्वजनों से हाथ धोना पड़े । ऐसे समय में वही मनुष्य विजयी होता है जिसने विपत्ति से लड़ने योग्य शस्त्रों से अपने को पहले से ही सुसज्जित कर रखा हो ।

ये चारों बातें घर के हर मनुष्य के ऊपर लागू करके देखना चाहिए कि इन आवश्यकताओं में से कौन–सी बात किसे प्राप्त नहीं हो रही है । जो बात जिसे प्राप्त नहीं हो रही हो उसे प्राप्त कराने का यथाशक्ति अवश्य हीं उद्योग करना चाहिए । यदि घर के दस आदमियों का जीवन किसी हद तक सुखी और समृद्ध बनाया जा सके तो समझिए कि विश्व कल्याण में, परमार्थ में, धर्म विस्तार में वृद्धि हुई और अपने को पुण्यफल मिला । यदि प्रयास प्रत्यक्ष रूप से सफल न हों तो भी लाभ ही है क्योंकि अपनी सद्भावनाएं सदा अपने मस्तिष्क में काम करती रहेंगी और वे शुभ संस्कारों के रूप में अपनी जड़ जमा लेंगी । यह शुभ संस्कार चुपचाप पल्लवित होते रहते हैं और अपने लोक परलोक को नाना विधि से आनंदित एवं सुख समृद्धि युक्त बनाते रहते हैं ।

परिवार भी हमारा एक शरीर ही है

शारीरिक समस्या के बाद पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं का नंबर आता है । परिवार भी एक प्रकार का सामाजिक शरीर ही है । मनुष्य अपनी देह तक सीमित नहीं रहता वरन् उसे अपनी स्त्री–

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चे, भाई–बहिन, माता–पिता आदि को मिलाकर एक कुटुंब बनाना पड़ता है । एक घर में एक साथ रहने वाला कुटुंब भी एक शरीर ही होता है, जिस प्रकार अपने देह के पालन पोषण की, सुख दुख की चिंता करनी पड़ती है वैसे ही परिवार के प्रत्येक सदस्य के बारे में हमें सोचना–समझना और विचार करना पड़ता है, उनका उत्तरदायित्व सिर पर लेना पड़ता है । आर्थिक दृष्टि से अपनी देह की ही भांति उन सबका भरण पोषण करना, स्वस्थ एवं प्रसन्न रखना, प्रगतिशील बनाना आवश्यक होता है । घर के लोगों का सुखी या दुखी होना, अच्छा या बुरा होना अपने को उतना ही भला या बुरा लगता है जितना कि अपने शरीर के किसी अंग का पीड़ित या अप्रसन्न रहना ।

हर कोई चाहता है कि उनका परिवार उसकी इच्छानुकूल अच्छे स्वभाव का, अच्छे गुण चरित्र का हो । पड़ौस का कोई परिवार दुखी, अस्त–व्यस्त या क्लेश–कलह में डूबा हुआ हो तो लोग उसका उपकार करते हुए मजा ले सकते हैं, पर अपने परिवार का एक भी सदस्य यदि बुरे स्वभाव का दिखाई देता है या न करने योग्य काम करता है तो उसका सीधा प्रभाव अपनी आर्थिक स्थिति पर, प्रतिष्ठा पर, संगठन एवं व्यवस्था पर पड़ता है । इस गड़बड़ी से अपने को वैसा ही कष्ट होता है जैसा शरीर के किसी अंग के ठीक तरह काम न करने पर होता है । इसलिए हर किसी की आकांक्षा यह रहती है कि परिवार की भीतरी व्यवस्था, क्रिया, प्रेम, सच्चाई, सेवा, सद्गुण, पुरुषार्थ, मितव्ययिता के आधार पर चले । घर का कोई सदस्य बाहर वालों को धोखा देकर कमाई कर लावे, चोरी चालाकी करे, झूठ बोले, ठगे तो इसे प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लिया जाता है, पर घर के भीतर परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति ऐसा ही व्यवहार करने लगें तो अव्यवस्था–क्लेश का वातावरण उत्पन्न हो जाता है । यह कोई नहीं चाहता कि मेरी स्त्री व्यभिचारिणी बने, मेरा पुत्र घर से चोरी करके ले जाया करे, बच्चे आपस में लड़ा करें, एक भाई दूसरे भाई से सहानुभूति न रखे । कारण स्पष्ट है कि मानव स्वभाव के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुर्गुण निश्चित रूप से कष्टकारक प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं ।

जो दुर्गुण घर के भीतर किसी सदस्य में प्रवेश पाकर घर की सारी व्यवस्था को अस्त व्यस्त कर देते हैं, वे दुर्गुण समाज के व्यापक क्षेत्र में अशांति उत्पन्न करते हैं । यदि अपने घर का कोई सदस्य बाजार से सौदा मांगने पर उसमें से पैसे बचा लेता है, गलत हिसाब बता देता है तो उसका प्रभाव घर की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है और वह व्यक्ति घर के अन्य लोगों का अविश्वास पात्र बन जाता है एवं बड़ा आर्थिक उत्तरदायित्व सौंपे जाने के अयोग्य माना जाता है । यही बात जब बढ़ती है तो वह पैसे चुराने वाला लड़का बड़ा होने पर यदि व्यापारी है तो अपने साझी से चोरी करता है, ग्राहकों को कम नापता–तौलता है अथवा यदि नौकर है तो रिश्वतखोरी, समय की चोरी आदि बुराइयां पैदा करता है । दुश्चरित्र लोगों की बात आखिर खुलती ही है । लोगों की आंखों में वह घृणा का पात्र बनता चला जाता है, अविश्वासी बनता है और फिर सच्चे मन से प्यार करने वाला कोई नहीं रह जाता । शिष्टाचारवश उससे मीठी बातें लोग कर सकते हैं, पर जब भी सच्ची सहायता का समय आता है तब सभी मुंह छिपा जाते हैं, भीतर दबी हुई घृणा ऐसे समय में आमतौर से असहयोग के रूप में प्रकट होती है । कभी तो उसके मित्र ही उसके प्रति दबी हुई घृणा का अप्रत्यक्ष प्रतिशोध लेते हैं और मुसीबत के समय सहायता करने की अपेक्षा अनुकूल अवसर आया जानकर चोट भी करते हैं ।

कोई यह नहीं चाहेगा कि उसका लड़का इस प्रकार लोगों का घृणास्पद, मित्रहीन एवं अनंत दुर्गति का अधिकारी बने, पर अपने बच्चे का भविष्य अंधकारमय बनाने की प्रक्रिया हम उसी दिन से चालू कर देते हैं जिस दिन कि बाजार से साग भाजी खरीदने में पैसे बचाने की भद्दी आदत को हम उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं और उसे हल्की सी बात मानते हैं । बचपन में यह आदत दो चार पैसे से शुरू होती है, पीछे स्कूल जाते समय वह कापी किताब के नाम पर बैठती है और अंततः जेबर रुपए चुराने या लड़ झगड़कर आवश्यकता से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिक पैसे ले लेने की बात तक जा पहुंचती है । अपव्यय करने की आदत आरंभ में छोटी होती है । बच्चे दो चार आना पाकर उसकी बेकार की चीजें खरीदते हैं, पीछे उन्हें शौक मौज की चीजें खरीदना अच्छा लगता है चाहे वह बेकार ही क्यों न हों । कई अच्छी आमदनी के लोग भी सदा कर्जदार और आर्थिक तंगी में बने रहते हैं क्योंकि उन्हें अनावश्यक खर्च करने की, फिजूलखर्ची की बुरी लत लगी होती है । यह लत उनने बचपन में उस समय सीखी होती है जब घर से उन्हें अनावश्यक खर्च करने के लिए किसी प्रकार पैसे मिल जाते थे और पैसे का मूल्य उनकी दृष्टि में तुच्छ प्रतीत होता था । यदि उन्हें आरंभ में ही यह समझा दिया गया होता कि पैसा कितने कठोर श्रम से कमाया जाता है और उसके सदुपयोग के परिणामों में क्या अंतर है तो संभवतः बच्चा अपव्यय की बुरी आदतों से बच जाता और उसे कर्जदारी, आर्थिक तंगी से ग्रसित एवं इसी के लिए चोरी, बेईमानी करने के लिए विवश न होना पड़ता ।

गरीबी में भी कई परिवार स्वर्ग का आनंद उठाते हैं और कई के यहां प्रचुर लक्ष्मी होते हुए भी नरक का वातावरण बना रहता है । कितने ही लोग गरीब घर में जन्म लेकर प्रगति के पथ पर अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ रहे हैं और उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचे हैं । इसके विपरीत कितने ही व्यक्ति अमीरी में पले पोसे और सब कुछ प्राप्त होने पर भी पूर्वजों से प्राप्त उत्तराधिकार की प्रचुर संपदा को गंवा बैठे हैं । उन्नति के सब साधन मिलने पर भी आगे बढ़ना तो दूर उल्टे अवनति के गर्त में गिरे हैं, इसलिए यह सोचना भूल है कि आर्थिक प्रबंध ठीक होने पर सारा परिवार सुखी एवं संतुष्ट रह सकता है । तथ्य यह है कि शांति, प्रगति और समृद्धि मनुष्यों के स्वभाव पर निर्भर रहती है । दृष्टिकोण के गलत या सही होने के कारण ही द्वेष बढ़ता है या प्रेम पनपता है । अच्छी आदतें जहां होती हैं वहां पराए अपने बन जाते हैं, परायों को अपना बना लेने के सद्गुण जिनके पास हैं, सचमुच इस संसार में वे ही अमीर हैं । वे जहां कहीं भी रहेंगे वहीं उनके मित्र और सहयोगी पर्याप्त मात्रा में पैदा होने और बढ़ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगेंगे । गुलाब की खुशबू अपने चारों ओर भौंरे और मधुमक्खी जमा कर लेती है । अच्छी आदतें मनुष्य रूपी फूल में खुशबू का काम करती हैं, उनके कारण दूसरे असंख्यों लोग मधुमक्खी और भौंरे के रूप में सहायक एवं प्रशंसक बनकर मंडराने लगते हैं । इसके विपरीत बुरी आदतें वह दुर्गंध हैं जिससे हर किसी की नाक फूटती है और हर कोई वहां से दूर भागना चाहता है ।

हम यदि सचमुच ही अपने परिवार को सुखी बनाना चाहते हैं तो उनकी आर्थिक व्यवस्था ठीक रखने तक की ही बात सोचकर संतोष न कर लें वरन् उसके स्वभाव को अच्छाई की दशा में ढालने का प्रयत्न भी उतनी ही तत्परता से करें जितना कि आर्थिक सुविधा जुटाने के लिए करते हैं । माना कि आर्थिक सुविधा के बिना प्रगति रुक जाती है और असुविधा एवं असंतोष का जन्म होता है । माना कि हम में से हर एक को अपना आर्थिक संतुलन ठीक बनाए रखने के लिए शक्ति भर प्रयत्न करना चाहिए, पर यह भी मान लेने की ही बात है कि इतने मात्र से किसी का जीवन न तो प्रगतिशील बन सकता है और न सुख शांति का वातावरण ही बन सकता है । आदतें यों देखने में बहुत ही छोटी वस्तुएं दिखाई पड़ती हैं, कई बार तो उनका कुछ मूल्य और महत्व भी समझ में नहीं आता, पर सच बात यही है कि उन्हीं के ऊपर जीवन की सारी आधारशिला रखी होती है । छोटा सा बीज ही अनुकूल परिस्थितियों में पाले पोसे जाने पर विशाल वृक्ष के रूप में परिणत होता है । छोटी छोटी आदतें ही मनुष्य जीवन के विकास या विनाश का एक मात्र आधार होती हैं । विषवृक्ष और अमरवेल के जैसे परस्पर विरोधी गुण हैं वैसे ही प्रतिफल बुरी और अच्दी आदतों के होते हैं । यदि हमें अपने परिवार को सुखी और समुन्नत बनाना हो तो अपने प्रत्येक परिजन में अच्छी आदतें उत्पन्न करने के लिए जी जान से प्रयत्न करना चाहिए ।

जिस प्रकार साग खरीदकर लाते समय बच्चे को पैसे बचा लेने की आदत आगे बढ़कर उसे चोर, बेईमान, बंदीगृहवासी एवं दुर्गतिग्रस्त बना सकती है उसी प्रकार अन्य बुरी आदतें भी उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पतन का कारण बन सकती हैं । आलस्य, आवेश, उद्दण्डता, कटुभाषण, अशिष्टता, शौकीनी, मटरगस्ती, सिनेमाबाजी, बुरी संगति, फिजूलखर्ची, फैशनपरस्ती, चटोरपन, बहानेबाजी, समय का दुरुपयोग आदि दुर्गुणों के विष वृक्ष धीरे धीरे बढ़ते रहने पर एक दिन ऐसे भयानक प्रतिफल उत्पन्न कर सकते हैं जिनके कारण जीवन में असफलता, दुर्दशा, पीड़ा और पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही न दे । यदि कोई पिता अपने स्त्री बच्चे के लिए आर्थिक सुविधाएं तो जुटाता है पर उनकी अच्छी आदतों को बढ़ाने एवं बुरी आदतों को हटाने के लिए प्रयत्न नहीं करता तो उसका परिवार कभी भी शांतिपूर्ण परिस्थितियों में नहीं रह सकता । जिसके घर में क्लेश रहेगा अनुपयुक्त घटनाएं और परिस्थितियां बनी रहेंगी वहां शांति कहां रहेगी और जहां शांति नहीं वहां समृद्धि का अर्थ ही क्या रह जाता है ?

शरीर की उपेक्षा करने वालों को रोगग्रस्त होकर पछताना पड़ जाता है । अकाल मृत्यु में मरते समय उसे अपनी भूलों पर भारी दुख होता है । देह का विकास रूप ही परिवार है । कर्तव्य, उत्तरदायित्व, आवश्यकता, व्यवस्था और स्नेह के स्वाभाविक बंधनों से परिवार को मनुष्य के साथ ईश्वर ने इतनी मजबूती से बांध दिया है कि उससे छुटकारा मिल सकना कठिन है । देह के सभी अंग प्रत्यंगों को जिस प्रकार हमें अपने साथ ही रखना और संभालना होता है उसी प्रकार परिवार के सदस्यों को भी साथ लेकर चलना, साथियों का सज्जन होना ही स्वर्ग और दुर्जन होना ही नरक माना जाता है । यदि अपने परिजनों की दुर्जनता छुड़ाने और सज्जनता बढ़ाने में हम सफल न हो सके तो उसका दण्ड हमारी आत्मा हर घड़ी जलन, कुढ़न, खेद, पश्चात्ताप आदि के रूप में हमें देती रहेगी और एक प्रकार से नरक की आग में हम सदा जलते रहेंगे ।

हमारा संपूर्ण शरीर परिवार के सभी सदस्यों से मिलकर बना है, इसे स्वस्थ रखना भी हमारा कर्तव्य है । जिस प्रकार अनुपयुक्त विचारों से हमारी देह रोगग्रस्त होती है उसी प्रकार अपने कर्तव्य को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भुला देने से, परिवार के प्रति अपने दृष्टिकोण सही न रखने से हमारा यह कुटुंब शरीर रोगग्रस्त होता है । पारिवारिक स्वास्थ्य का सुधार भी शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने की तरह आवश्यक है, पर इसके लिए हमें अपने को ही सुधारना पड़ेगा, अपनी विचारधारा को ठीक करना पड़ेगा, अपने को सुधारने से दूसरे स्वतः ही सुधरने लगते हैं ।

पारिवारिक स्वराज्य

'अनावश्यक संकोच' पारिवारिक कलह की वृद्धि में सबसे प्रधान कारण है । बाहर के आदमियों से तो हम घुल मिलकर बात करते हैं परंतु घर वालों से सदा उदासीन रहते हैं, बहुत ही संक्षिप्त वार्तालाप करते हैं । बहुत कम परिवार ऐसे देखे जाते हैं जिनमें घर के लोग एक दूसरे से अपने मन की बात कह सकें । शिष्टाचार, बड़प्पन, लिहाज, लाज–पर्दा आदि का वास्तविक रूप नष्ट होकर उसका ऐसा विकृत स्वरूप बन गया है कि घर के सब लोग अपनी अपनी मनोभावनाएं, आवश्यकताएं और अनुभूतियां एक दूसरे के सम्मुख रखते हुए झिझकते हैं । इस गलती का परिणाम यह होता है कि एक दूसरे को ठीक समझ नहीं पाते । किसी बात पर मतभेद हो तो उस भेद को अवज्ञा, अपमान या विरोध मान लिया जाता है–ऐसा न होना चाहिए । किसी बात का निर्णय करना हो तो घर के सभी सलाह दे सकने के योग्य स्त्री–पुरुषों की सलाह लेनी चाहिए । अपने भाव प्रकट करने का हर एक को अवसर दिया जाए, जो काम करना हो उसे इस प्रकार अच्छी भूमिका के साथ तर्क और उदाहरणों के साथ रखना चाहिए कि उस पर घर वालों की सहमति मिल जाए । हर व्यक्ति यह अनुभव करे कि मेरे आदेश से ही यह कार्य हुआ । जिस प्रकार राज्य संचालन में प्रजा की सहमति आवश्यक है उसी प्रकार गृह व्यवस्था में परिजनों की सहमति रहने से शांति और सुव्यवस्था रहती है । परिवार की प्रजा यह म समझे कि किसी की इच्छा जबरदस्ती हमारे ऊपर थोपी जा रही है वरन् उसे भान होना चाहिए कि सबके लाभ और हित के लिए विचार विनिमय, विवेक के साथ नीति निर्धारित की गई है तथा औचित्य एवं ईमानदारी को व्यवस्था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संचालन में प्रधान स्थान दिया जा रहा है । इस सरल स्वाभाविक और बिना किसी कठिनाई की नीति का जिस परिवार में पालन किया जाता है वहां सब प्रकार सुख शांति बनी रहती है ।

सास–बहुओं में, ननद–भौजाइयों में, देवरानी–जेठानियों में अक्सर छोटी छोटी बातों पर लड़ाई हुआ करती है । स्त्री जाति को मानसिक विकास के अवसर प्रायः कम ही उपलब्ध होते हैं, इसलिए उनकी उदारता संकुचित होती है । निस्संदेह पुरुष की अपेक्षा आत्म त्याग और स्नेह की मात्रा स्त्रियों में बहुत अधिक होती है, पर वह अपने बच्चों या पति में अत्यधिक लग जाने के कारण दूसरों के लिए कम बचती हैं । समझा बुझाकर एक दूसरे के लिए उदारता प्रकट करने का अवसर देकर उन्हें उन्हें यह अनुभव कराना चाहिए कि परिवार के सब सदस्य बिल्कुल निकटस्थ, बिल्कुल सगे हैं । विरानेपन या परायेपन की दृष्टि से सोचने की दुर्भावना को हटाकर आत्मीयता की दृष्टि से सोचने योग्य उनकी मनोभूमि को तैयार करना चाहिए । बड़े–बूढ़े यह आशा न करें कि हमारे साथ शिष्टाचार की अति बरती जानी चाहिए, उन्हें छोटों के प्रति क्षमा, उदारता, प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए–दास, नौकर या गुलाम जैसा नहीं । इसी प्रकार छोटों को बड़ों के प्रति आदर भाव रखना चाहिए, घर के अन्य कामों की अपेक्षा उनकी पहले आवश्यकता और इच्छाओं को पूरा करना चाहिए । घर का काम धंधा आमतौर से बंटा हुआ रहना चाहिए । बीमारी, कमजोरी, गर्भावस्था या अन्य किसी कठिनाई की दशा में दूसरों को उसका काम आपस में बांट कर उसे हलका कर देना चाहिए । नित्य पहिनने के जेवरों को छोड़कर अन्य जेवर सम्मिलित रखे जा सकते हैं जिनका आवश्यकतानुसार सब उपयोग कर लें ।

यदि कोई गलती कर रहा हो तो एकांत में उसे प्रेमपूर्वक उसकी ऊंच–नीच, लाभ–हानि समझानी चाहिए । सबके सामने कड़ा विरोध करना, अपमान करना, गाली बकना, मारना पीटना बहुत अनुचित है । इससे सुधार कम और बिगाड़ अधिक होता है, द्वेष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्भाव और घृणा की वृद्धि होती है । यह सब होना एक अच्छे परिवार के लिए लज्जाजनक है । समझाने से आदमी मान जाता है और अपमानित होने पर वह क्रुद्ध होकर प्रतिशोध लेता एवं उपद्रव खड़े करता है ।

दूसरों की आंख बचाकर अपने लिए अधिक लेना बुरा है । बाजार में चुपके से स्वादिष्ट पदार्थ चटकर आना, चुपके चुपके निजी कोष बनाना, घर भर को ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, असंतोष और निन्दा के लिए आमंत्रित करना है । बाहर व्यवसाय क्षेत्र में काम करने के लिए यदि बढ़िया कपड़ों की आवश्यकता है तो सब लोगों को यह अनुभव करना चाहिए कि यह शौक या फैशन के लिए नहीं आवश्यकता के लिए किया गया है । अधिक परिश्रम की क्षतिपूर्ति के लिए यदि कुछ विशेष खुराक की जरूरत है तो दूसरों को यह महसूस होने देना चाहिए कि चटोरेपन के लिए नहीं जीवन रक्षा के लिए किया गया है । भावनाएं छिपती नहीं, चटोरपन या फैशन परस्ती बात बात में टपकती है । विशेष आवश्यकता की विशेष पूर्ति केवल विशेष अवसर पर ही रहती है । शेष आचरण सबके साथ घुला मिला और समान रहता है, जिसे जो विशेष सुविधा प्राप्त करनी हो वह प्रकट रूप से होनी चाहिए ।

गृहस्थी भी किसी प्रजातंत्र के कम नहीं है, परिवार का मुखिया सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति होता है । किसी को कृषि काम मिला होता है, कोई दुग्ध मंत्रालय का काम संभालता है—इसी तरह घर की सारी व्यवस्था चलती रहती है । शासन में कानूनी नियम होते हैं । गृहस्थ में संपूर्ण कर्तव्यों का निर्वाह आध्यात्मिक संबंधों पर निर्धारित रहता है । इन संबंधों में यदि शुद्धता, सात्विकता बनी रहे तो गृहस्थ में सुखद वातावरण बना रहता है ।

इन संबंधों में यदि खटाई उत्पन्न हो गई वही गृहस्थ नारकीय यंत्रणाओं में घिर जाता है । परिवार के अमन चैन मिट जाते हैं, सारा घर लड़ाई का अखाड़ा बन जाता है । सारे श्री सौभाग्य धूल में मिल जाते हैं, उन्नति रुक जाती है और लोग निर्धनता का दीन हीन जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिताने को विवश हो जाते हैं ।

परिवार में जब अपने अपने स्वार्थ का भ्रष्टाचार बढ़ता है और लोग कर्तव्य की आध्यात्मिक भावना को भुला देते हैं तभी गृहस्थ की दुर्दशा होती है । कितने कृतघ्न होंगे वे लोग जो अपने स्वार्थ के लिए परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व भुलाकर अपना चूल्हा चौका अलग रखने में अपनी बुद्धिमानी समझते हैं । किसी ने ऐसे कुटिल व्यक्तियों को कभी फलते फूलते भी नहीं देखा होगा जो फूट के बीज बोकर सारी पारिवारिक व्यवस्था को तहस नहस कर डालते हैं ।

पिता अपने पुत्र के लिए सारे जीवन भर क्या नहीं करता ? श्रम करता है, जब वह खुद सो रहा होता है तब गए रात उठकर खेतों में जाता है, हल चलाता है, मजदूरी करता है, नौकरी बजाता है । क्या से सब कुछ अपने लिए करता है ? नहीं, एक व्यक्ति का पेट पालना तो चार पांच रुपए भर की मजदूरी काफी है, दिन भर श्रम करने से क्या लाभ ? पर बेचारा बाप सोचता है कि बच्चे के लिए दूध की व्यवस्था करनी है, दवा लानी है, कपड़े सिलाने हैं, फीस देनी है, पुस्तकें लाना है और उसके भावी जीवन की सुख सुविधा के लिए कुछ छोड़ भी जाना है । जब तक शक्तियां काम देती हैं कोई कसर नहीं उठा रखता । अपने पेट को गौण मानकर बेटे के लिए आजीवन अनवरत श्रम करने का साहस कोई बाप ही कर सकता है ।

पाल पोस कर बड़ा कर दिया, शिक्षा दीक्षा पूरी कराई, विवाह शादी करा दी, धंधा लग गया । पिता से पुत्र की कमाई बढ़ गई, उसके अपने बेटे हो गए, स्त्री की आकांक्षाएं बढ़ीं, बेटे ने बाप के सारे उपकारों पर पानी फेर दिया । कोई न कोई बहाना बनाकर बाप से अलग हो गया । हाय री तृष्णा ! तेरे लिए इतना सब कुछ किया और तू उसकी वृद्धावस्था का सहारा भी न बन सका । उस कृतघ्नता से बढ़कर इस संसार में और कौन सा पाप हो स्कता है । अपने स्वार्थ, भोग लिप्सा, स्वेच्छाचारिता के लिए बाप को ठुकरा देने वालों को पामर न कहा जाए तो और कौन सा संबोधन उचित हो सकता है ।

पिता परिवार का अधिष्ठाता, आदेशकर्ता और संरक्षक होता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी जिम्मेदारियां बढ़ी होती है । सबकी देख रेख, सबके प्रति न्याय, सबकी सुरक्षा रखने वाला पिता होता है । क्या उसके प्रति उपेक्षा का भाव मानवीय हो सकता है ? कोई राक्षस वृत्ति का मनुष्य ही कर सकता है जो अपने माता–पिता को वृद्धावस्था में छोड़ देता है ।

परिवार में पिता को सम्मान मिलता है तो उनके दीर्घकालीन अनुभव, योग्य संचालन, पथ प्रदर्शन, भावी योजनाओं को नियंत्रित करने का लाभ भी परिवार को मिलता है । अपने प्रेम, वात्सल्य, करुणा, उदारता, संगठनात्मक बुद्धि से वह सब पर छाया किए रहता है, वह परिवार का पालन करता है । पिता की पूजा करना, उसकी उचित सेवा टहल और देखरेख रखना परमात्मा से कम फलदायक नहीं होता । पिता का आशीर्वाद पाकर पुत्र की आकांक्षाएं तृप्त होती हैं तथा जीवन सुमधुर, नियंत्रित और बाधा रहित बनता है ।

इस युग में पिता और पुत्र के संबंधों में कड़वाहट आ गई है, वह मनुष्य के संकुचित दृष्टिकोण और स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही है । पिता पुत्र के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दे और पुत्र व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा अनुशासन अवज्ञा करे तो उसे बेटे को निन्दनीय समझा जाना चाहिए ।

मनुष्य का सबसे शुभ चिंतक, हितैषी, पथप्रदर्शक, उदार जीवन रक्षक पिता ही होता है । वह समझता है कि बेटे को किस रास्ते पर लगाया जाए कि वह सुखी हो–समुन्नत हो, क्योंकि उसकी त्रुटियों का ज्ञान पिता को ही होता है । जो इन विशेषताओं का लाभ नहीं उठाते उन्हें अंत में अधिक दुख और दैन्यताओं का ही मुंह देखना पड़ता है ।

पिता और पुत्र, पिता और पुत्री के संबंध बड़े कोमल, मधुर और सात्विक होते हैं । इस आध्यात्मिक संबंध का सहृदयतापूर्वक पालन करने वाले व्यक्ति देव श्रेणी में आते हैं, उनका मान, सम्मान और प्रतिष्ठा होनी ही चाहिए ।

परिवार में माता का स्थान पिता के समतुल्य ही होता है । एक दूसरे को बड़ा छोटा नहीं कहा जा सकता । पिता कर्म है तो माता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भावना । कर्म और भावना के सम्मिश्रण से जीवन में पूर्णता आती है । गृहस्थी की पूर्णता तब है जब उसमें पिता और माता दोनों को समान रूप से सम्मान मिले, माता का महत्व किसी भी अवस्था में कम नहीं हो सकता ।

व्यक्ति का भावनात्मक प्रशिक्षण माता करती है, उसी के रक्त, मांस और ओजस से बालक का निर्माण होता है । कितने कष्ट सहती है वह बेटे के लिए । स्वयं गीले बिस्तर में सोकर बच्चे को सूखे में सुलाते रहने की कष्टसाध्य क्रिया पूरी करने की हिम्मत भला है किसी में ? माता का हृदय दया और पवित्रता से ओत प्रोत होता है । जिस मनुष्य ने दया और ममत्व की मूर्ति माता को पूज्य भाव से नहीं देखा, उसका सम्मान नहीं किया, आदर की भावनाएं व्यक्त नहीं कीं वह मनुष्य नर पिशाच ही कहलाने योग्य हो सकता है ।

इस विकृति को फिर से सुधारना है । राम और भरत, गोरा और बादल के आदर्श भ्रातृ-प्रेम को फिर से पुनर्जीवित करना है- इससे हमारी शक्ति सद्भावनाएं जागृत होंगी, हमारा साहस बढ़ेगा और पुरुषार्थ पनपेगा ।

स्नेहमयी बहिन, उदारता की मूर्ति भावजों को भी उसी तरह का सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए जिस तरह माता के प्रति अपनी आत्मीयतापूर्ण गहन भावनाएं हों ।

घर का वातावरण कुछ इस तरह का शील संयुक्त, हंसमुख और उदार बने जिससे सारा परिवार हरा भरा नजर आए । इसके लिए धन आदि उपकरणों की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी अपने संबंधियों के प्रति कर्तव्य और सेवा की भावना की । परिवार में सौमनस्य हो तो वहां न तो सुख की कमी रहेगी और न शांति की । आह्लाद फूट पड़ रहा होगा ऐसे घर में जहां सबके दिल मिले होंगे । हमारा घर भी ऐसा ही हो तो समझें कि पारिवारिक जीवन के प्रति अपने उत्तरदायित्व भली प्रकार पूरे किए गए हैं, यही परमात्मा की सच्ची पूजा है, इसे तिरस्कृत कभी नहीं किया जाना चाहिए ।

मुद्रक युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उठाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org